AGPE THE ROYAL GONDWANA RESEARCH JOURNAL
OF HISTORY, SCIENCE, ECONOMIC, POLITICAL AND SOCIAL SCIENCE
ISSN (E): 2583-1348 | A Peer reviewed | An Open Access & Indexed
Volume 07 | Issue 05 | May 2026 | *www.agpegondwanajournal.co.in* | Page No. 30- 38

बैगा जनजाति में पारंपरिक ज्ञान एवं उनके जीवन शैली का एक भौगोलिक अध्ययन

डॉ. मीनाक्षी मेरावी
सहायक प्राध्यापक, भूगोल
प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ़ एक्सीलेंस, शासकीय महाकोशल अग्रणी महाविद्यालय, जबलपुर (म. प्र.)

सार -

बैगा जनजाति मध्य भारत विशेषकर मध्य प्रदेश (मंडला, डिंडोरी, बालाघाट), छत्तीसगढ़ और झारखंड में निवास करने वाली एक प्रमुख एवं विशेष पिछड़ी जनजाति है। उन्हें 'प्रकृतिपुत्र' भी कहा जाता है। मध्य प्रदेश की बैगा जनजाति राज्य की एक प्रमुख और विशेष रूप से पिछड़ी जनजाति है। यह मुख्य रूप से मंडला, डिंडोरी और बालाघाट जिलों में निवास करती हैं जिन्हें 'बैगा चक' भी कहा जाता है। अपनी समृद्ध संस्कृति, पाज्ञान और प्रकृति के साथ घनिष्ठ संबंध के लिए जानी जाती है। बैगा जनजाति के लोग वृक्ष की पूजा करते है तथा बूढ़ा देव एवं दूल्हा देव को अपना देवता मानते है। बैगा जनजाति का मुख्या व्यवसाय वनोपज संग्रह, पशुपालन, खेती तथा ओझा का कार्य करना है। बैगा झाड़-फूक एवं जादू-टोना में विश्वास करते है। इनकी वेश-भूषा अत्यंत अल्प होती है। आधुनिकता के दौर में बैगा जनजाति की संस्कृति में भी आधुनिकता का समावेश हो रहा है। बैगा अब सघन वन, कंदराओं तथा शिकार को छोड़ कर मैदानी क्षेत्रों में रहना तथा कृषि कार्य करना प्रारंभ कर रहे है। किन्तु बैगा अपने आप को जंगल का राजा और प्रथम मानव मानते है। इनका मानना है कि इनकी उत्पत्ति ब्रह्मा जी के द्वारा हुई है। इस प्रकार इस शोध पत्र के माध्यम से बैगाओं के पारम्परिक ज्ञान और उनके जीवन शैली से संबाधित अवधारणाओं का ऐतिहासिक एवं भौगोलिक विश्लेषण किया किया गया है।

मुख्य शब्द - बैगा जनजाति, पारम्परिक औषधीय ज्ञान, जीवन शैली एवं सामाजिक संरचना, पारम्परिक और वन आधारित व्यवसाय, शासकीय योजनाएं, आधुनिकता का प्रभाव।

परिचय -

बैगा जनजाति मध्यप्रांत के जनजातियों में विशेष स्थान रखता है। इस जनजाति के विकास स्तर को देखते हुए मध्यप्रदेश शासन ने इसे विशेष पिछड़ी जनजाति समूह में रखा है। विशेष पिछड़ी जनजाति होने के कारण बैगा जनजाति को सरकार का संरक्षण प्राप्त है जिसके फलस्वरूप इस जनजाति के लिए अनेक शासकीय योजनाये चलाये जा रहें है। बैगा

CORRESPONDING AUTHOR:	RESEARCH ARTICLE
डॉ. मीनाक्षी मेरावी सहायक प्राध्यापक, भूगोल प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ़ एक्सीलेंस, शासकीय महाकोशल अग्रणी महाविद्यालय, जबलपुर (म. प्र.) Email: meravimeenakshi@gmail.com	

जनजाति जितनी प्राचीन जनजाति है उतनी ही प्राचीन बैगाओं की संस्कृति भी है। बैगा जनजाति अपने संस्कृति को संजोये हुए है।

जनजातीय पारंपरिक ज्ञान उनके भौगोलिक परिवेश और प्राकृतिक संसाधनों पर गहराई से निर्भर करता है जिससे उनकी जीवनशैली, संस्कृति और सामाजिक संरचनाएँ आकार लेती हैं। यह ज्ञान वनोपज संग्रह, औषधीय पौधों के उपयोग, जैव विविधता संरक्षण और टिकाऊ कृषि विधियों जैसे पहलुओं को समाहित करता है। एक भौगोलिक अध्ययन में इन जनजातियों के प्राकृतिक परिवेश से जुड़े पारंपरिक ज्ञान, उनकी जीवनशैली और उनके आसपास के भौतिक वातावरण के बीच के जटिल संबंधों का विश्लेषण किया जाता है, जिससे उनकी सांस्कृतिक पहचान और स्थिरता के महत्व को समझा जा सके।

बैगा जनजाति का पारंपरिक ज्ञान मुख्य रूप से औषधि-उपचार, प्रकृति से जुड़ाव और सामाजिक-धार्मिक प्रथाओं पर आधारित है। यह ज्ञान पीढ़ी-दर-पीढ़ी गुरु-शिष्य परंपरा या मौखिक रूप से हस्तांतरित होता है और इसे किताबों में दर्ज करने के बजाय जीवन शैली और कलाओं के माध्यम से जीवित रखा जाता है।

मध्यप्रदेश में बैगा जनजाति मुख्य रूप से मंडला, डिंडोरी, बालाघाट और शहडोल जिलों में निवास करती है। यह एक प्राचीन और सांस्कृतिक रूप से समृद्ध जनजाति है जो अपने पारंपरिक रहन-सहन, गोदना (टैटू) और प्रकृति के प्रति गहरे सम्मान के लिए जानी जाती है।

अध्ययन के उद्देश्य -

प्रस्तुत शोध के निम्नलिखित उद्देश्य हैं -

- बैगा जनजाति की जीवनशैली और सामाजिक संरचना का अध्ययन करना।
- सांस्कृतिक और पारंपरिक ज्ञान की सुरक्षा। यह अध्ययन जनजातीय ज्ञान को संरक्षित करने और उसे महत्व देने पर केंद्रित है।
- आधुनिक जीवनशैली और वैश्वीकरण के प्रभाव के कारण जनजातियों की पारंपरिक जीवनशैली, भूमि और सांस्कृतिक विरासत प्रभावित हो रही है।
- प्रस्तुत शोध अध्ययन का उद्देश्य बैगा जनजातियों की आवश्यकताओं और आकांक्षाओं को ध्यान में रखते हुए उनकी सांस्कृतिक धरोहर को संरक्षित कर सतत विकास की रणनीतियाँ सुझाना है।

जनजाति से तात्पर्य -

जनजाति उन लोगों का समूह है जो एक समान धर्म, इतिहास, भाषा या संस्कृति साझा करते हैं। प्रत्येक जनजाति अद्वितीय होती है और उनकी अपनी प्रथाएँ होती हैं, जिनमें से कई अन्य जनजातियों से भिन्न होती हैं।

दुनिया भर में जनजातियाँ प्रकृति के साथ अपनी निकटता के लिए जानी जाती हैं। वे प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग अपने अस्तित्व के लिए करते हैं और इनका संरक्षण अपने कर्तव्यों और दायित्वों का हिस्सा मानते हैं। इस प्रकार प्रकृति-मानव-आत्मा की अवधारणा अत्यंत प्राचीन है क्योंकि जैविक विविधता और सांस्कृतिक विविधता दोनों ही भारत में कई जनजातियों की उत्पत्ति से सीधे तौर पर जुड़ी हुई हैं जो अपनी उत्पत्ति को कुछ पौधों और वृक्षों से मानती हैं और उन्हें

पवित्र खांचे के रूप में संरक्षित करती हैं। प्रस्तुत शोधपत्र में बैगा जनजातियों की जैव विविधता, पारंपरिक ज्ञान और उनके जीवन के संबंध पर एक अध्ययन करना है।

2. **अध्ययन का क्षेत्र एवं विस्तार** -

मध्यप्रदेश राज्य के दक्षिण-पूर्वी छोर पर 21 डिग्री 19 मिनिट से 22 डिग्री 24 मिनिट उत्तरी अक्षांश व 79 डिग्री 31 मिनिट से 81 डिग्री 3 मिनिट पूर्वी देशांतर के बीच स्थित एक शांत, सुंदर और संसाधन-संपन्न जिला है। वैनगंगा नदी की गोद में बसा यह जिला छत्तीसगढ़ और महाराष्ट्र राज्यों की सीमाओं को छूता है। इसकी भौगोलिक रचना तीन प्रमुख हिस्सों में विभाजित है — पूर्व का वनक्षेत्र, मध्य की पहाड़ी पट्टियां और पश्चिम का समतल कृषि क्षेत्र। लगभग 52 % क्षेत्र घने वनों से आच्छादित है जो इसे जैव- विविधता से समृद्ध बनाते हैं। बालाघाट जिले का क्षेत्रफल 9,245 वर्ग किलोमीटर है एवं वर्तमान समय में बालाघाट न केवल प्राकृतिक सुंदरता और ऐतिहासिक महत्व से भरपूर है बल्कि यह खनिज, कृषि और पारंपरिक वन संसाधनों के कारण आर्थिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण जिला बन चुका है। ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाली बालाघाट जिले की कुल आबादी 1,456,882 है, जिनमें से पुरुष 719,794 और महिलाएं 737,088 हैं। बालाघाट जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में लिंग अनुपात 1024 महिलाएं प्रति 1000 पुरुष है।

मध्यप्रदेश राज्य में बालाघाट जिले की अवस्थिति :-

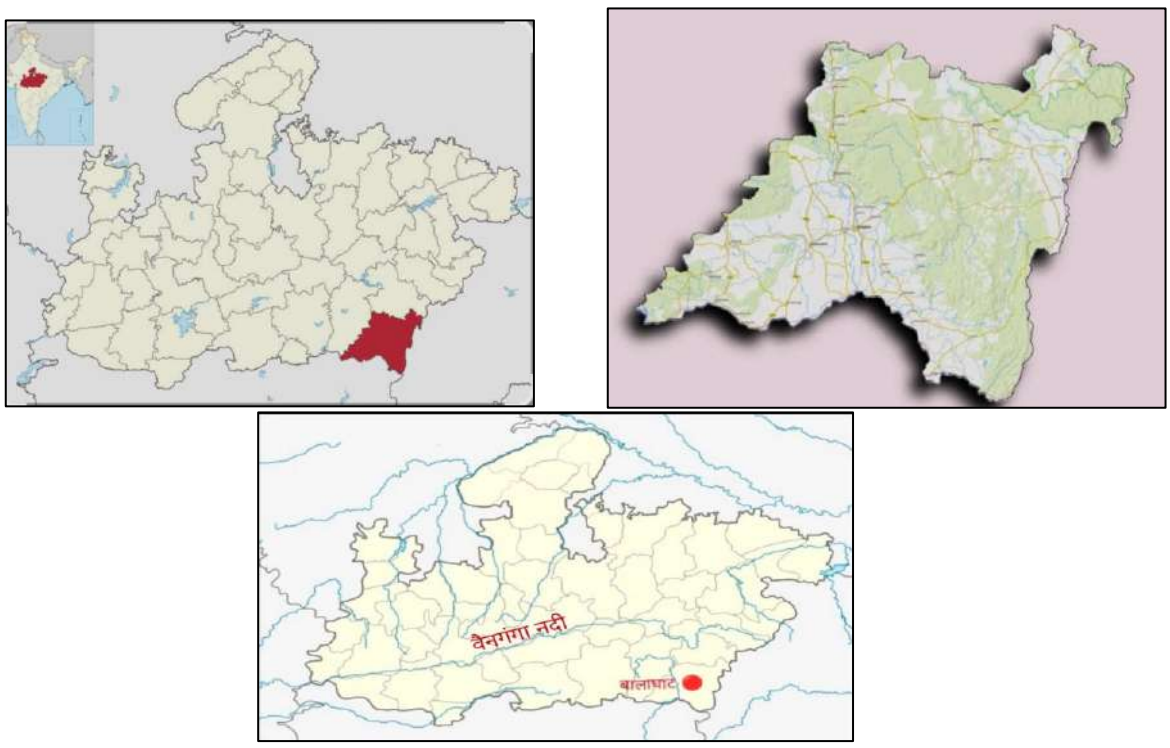

3. **शोध प्रविधि एवं आंकड़ों का संकलन** -

प्रस्तुत शोध अध्ययन प्राथमिक और द्वितीयक समंकों पर आधारित है। जिसमें बैगा ग्राम में सर्वेक्षण से प्राप्त जानकारी, पत्र-प्रत्रिकाओं, गजेटियर इत्यादि का सहारा लिया गया है।

4. **बैगा जनजाति में पारम्परिक ज्ञान का इतिहास** -

बैगा मध्य प्रदेश (जनसंख्या 250,000) में पाई जाने वाली एक जनजाति है। बैगाओं की सबसे बड़ी संख्या मध्य प्रदेश के मंडला जिले और बालाघाट जिले के बैगा-चक में पाई जाती है। उनकी उपजातियाँ हैं - बिजवार, नरोतिया, भारतीय, नाहर, राय भैना और काढ़ भैना। 2011 की जनगणना के अनुसार उनकी जनसंख्या 448,848 थी।

बालाघाट जिले में बैगा जनजाति के पारंपरिक ज्ञान का इतिहास सदियों पुराना है, जो प्रकृति के साथ उनके गहरे जुड़ाव से जुड़ा है। उनके ज्ञान में जड़ी-बूटियों और औषधियों से संबंधित पारंपरिक चिकित्सा, कृषि के पारंपरिक तरीके, और बेवर जैसी खेती विधियां शामिल हैं जिन्हें पीढ़ी-दर-पीढ़ी गुरु-शिष्य परंपरा से हस्तांतरित किया गया है।

औषधि ज्ञान -

बैगा पारंपरिक चिकित्सक होते हैं, जो जड़ी-बूटियों और औषधियों के ज्ञान को गुरु-शिष्य परंपरा के माध्यम से पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरित करते हैं। सुषेण नामक बैगा को उनका पूर्वज माना जाता है, जिन्होंने पौराणिक लक्ष्मण जी का उपचार किया था।

कृषि और जंगल का ज्ञान -

बैगा जनजाति की पारंपरिक कृषि झूम खेती है, जिसे वे "बेवर" या "दहिया" कहते हैं। यह एक जैविक और मिश्रित खेती की प्रणाली है जो प्रकृति के अनुकूल होती है और इसमें जंगलों को साफ करके खेती की जाती है, जिससे विभिन्न प्रकार के अनाज और सब्जियां उगाई जाती हैं। हालांकि अब धीरे-धीरे इसमें पारंपरिक कृषि यंत्रों का भी प्रयोग होने लगा है।

धार्मिक और सामाजिक ज्ञान -

बैगा अपने अनुष्ठानों और उत्सवों में भी पारंपरिक ज्ञान का उपयोग करते हैं। देवार को जादू टोना, वर्षा कराने और बाघों को शांत करने में कुशल माना जाता है, जबकि गुनिया पशुओं और मनुष्यों के इलाज में विशेषज्ञ होते हैं। बैगाओं में पूजा-पाठ के लिए विशेष पुजारी होते हैं। ये ओझा या बैगा के रूप में भी काम करते हैं, जो जादू-टोना और वैद्य का काम भी जानते हैं।

औषधीय पौधों और जड़ी बूटियां का उपयोग -

बैगा जनजाति पारंपरिक उपचार के लिए औषधीय पौधों और जड़ी-बूटियों का व्यापक उपयोग करती है जो उनके ज्ञान और संस्कृति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। इस उपचार प्रणाली में वैद्य और गुनिया जैसे पारंपरिक चिकित्सक होते हैं और ज्ञान गुरु-शिष्य परंपरा से अगली पीढ़ी तक पहुँचता है। सामान्य बीमारियों जैसे खांसी और बुखार से लेकर विशिष्ट बीमारियों जैसे तपेदिक और कुष्ठ रोग के लिए भी औषधीय पौधों का उपयोग किया जाता है।

औषधीय पौधों का उपयोग एवं उपचार के तरीके -

बालाघाट जिले (मध्य प्रदेश) में बैगा जनजाति पारंपरिक चिकित्सा और औषधीय पौधों के ज्ञान के लिए जानी जाती है विशेषकर बैहर और लांजी जैसे क्षेत्रों में। ये वन-आधारित समुदाय सामान्य बीमारियों से लेकर जटिल रोगों तक के इलाज के लिए स्थानीय वनस्पतियोंक और कुष्ठ रोग के लिए भी औषधीय पौधों का उपयोग किया जाता है।

बैगा जनजाति विभिन्न बीमारियों के इलाज के लिए पौधों के विभिन्न हिस्सों का उपयोग करती है। अक्सर ताजे पौधे के हिस्से इस्तेमाल होते हैं, लेकिन सूखे हिस्सों का भी उपयोग किया जाता है।

- चिरचिटा / अपामार्ग (Achyranthes aspera):

बैगा इसका उपयोग कुष्ठ रोग (leprosy) और त्वचा रोगों के उपचार में करते हैं।

- बज्रदन्ती (Barleria prionitis):

इसका उपयोग तपेदिक (Tuberculosis) के उपचार में किया जाता है।

- सफेद अरंड (Jatropha curcas):

कैंसर और ट्यूमर जैसे रोगों के उपचार में इसके उपयोग का उल्लेख मिलता है।ब्लूमिया (Blumea lacera): बवासीर के उपचार में इस पौधे का उपयोग किया जाता है।

- पलाश / ढक (Butea monosperma):

पेट के कीड़ों और त्वचा की समस्याओं के लिए उपयोगी।

- डायबिटीज:

बीजा (टेरोकार्पस मार्सुपियम) के पत्तों के रस को पानी में मिलाकर पिया जाता है।

- लिवर की समस्या:

आम बटुआ की छाल को पीसकर पिया जाता है, इसके अलावा कृषि कांदा खिलाते हैं।

- बेल (Aegle marmelos):

दस्त और पेट के विकारों के इलाज में उपयोग किया जाता है।

- नीम (Azadirachta indica):

घावों को साफ करने और त्वचा रोगों (खुजली, मस्से) के लिए।

बैगा जनजाति की जीवन शैली एवं संस्कृति -

मध्य भारत के आदिवासी समुदायों के मौखिक इतिहास, बैगा जनजाति की सरलता और सादगी को स्पष्ट रूप से उजागर करते हैं। बैगा आदिवासी मध्य भारत का एक वनवासी आदिवासी समुदाय है। इस क्षेत्र की स्थानीय पौराणिक कथाओं में, उन्हें अक्सर पृथ्वी के मूल निवासी के रूप में मान्यता प्राप्त है। एक आदिम द्रविड़ जनजाति के रूप में पहचाने जाने वाले बैगा अपनी पारंपरिक रूप से न्यूनतम जीवन शैली (रसेल 1916) के लिए जाने जाते हैं। वे प्रकृति के तत्वों के साथ घनिष्ठ रूप से रहते थे और आज भी उनका दैनिक जीवन और आजीविका उनकी वन पारिस्थितिकी के साथ घनिष्ठ रूप से जुड़ी हुई है।

बैगा जंगलों से औषधीय जड़ी-बूटियाँ, जड़ें, फल और अन्य उपभोज्य वनस्पतियाँ खोजने में भी कुशल होते हैं। उनकी अधिकांश दैनिक भौतिक और सांस्कृतिक ज़रूरतें इसी तरह पूरी होती हैं। गायन और नृत्य न केवल लोकप्रिय मनोरंजन हैं, बल्कि बैगा लोगों के जीवन में एक अनुष्ठान और सांस्कृतिक महत्व भी रखते हैं। त्यौहार, मड़ई (मेले), संस्कार और अनुष्ठान, विवाह और यहाँ तक कि जन्म और मृत्यु समारोह भी गायन और नृत्य के बिना अधूरे हैं। बैगाओं के त्योहारों में कर्मा, फाग, और ददरिया नृत्य प्रमुख हैं। ये नृत्य और संगीत के माध्यम से अपने देवी-देवताओं को प्रसन्न करते हैं।

साप्ताहिक बाज़ार बैगा लोगों के जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है और विशेष रूप से महिलाएँ बाज़ार जाने के लिए सज-धज कर आती हैं। फल, सब्ज़ियाँ, अनाज और अन्य मौसमी वनोपज जैसे चार, आँवला, साल के बीज, जड़ें, सूखे महुआ के फूल, शहद और मछली बाज़ार में बेचने के लिए लाए जाते हैं। इनसे प्राप्त धन का उपयोग नमक, मसाले, कपड़े और अन्य आवश्यक वस्तुएँ खरीदने में किया जाता है जो उन्हें जंगलों से नहीं मिल पातीं।

बैगा जनजातियों का जीवन पूर्णतः भौगोलिक परिस्थितियों और प्रकृति पर निर्भर होता है। वे अपने आसपास के जंगलों, पहाड़ों और नदियों से प्राप्त संसाधनों का उपयोग करते हैं। बैगा जनजातियों के पास विभिन्न औषधीय पौधों और वन-उत्पादों का गहरा ज्ञान होता है। वे टिकाऊ कृषि पद्धतियाँ अपनाते हैं, जैसे पारंपरिक झूमिंग खेती, जिससे मिट्टी की उर्वरता बनी रहती है साथ ही स्थानीय वन संसाधन जैव विविधता के संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

संस्कृति और रीति-रिवाज:

गोदना -

बैगा महिलाओं के पूरे शरीर पर गोदना गुदवाने की परंपरा है, जिसका धार्मिक और आध्यात्मिक महत्व है। बैगा महिलाओं के लिए टैटू का विशेष महत्व है। इन्हें महिलाओं की सुंदरता बढ़ाने वाला माना जाता है और अक्सर उनकी आदिवासी संस्कृति में इन्हें आभूषणों के विकल्प के रूप में देखा जाता है। बैगा महिलाओं में शरीर पर गोदना (टैटू) गुदवाने की अनूठी परंपरा है। यह उनके धर्म का एक अहम हिस्सा है, क्योंकि वे मानती हैं कि गोदना ही मृत्यु के बाद उनके साथ जाता है और यह आभूषण के रूप में उनके शरीर पर रहता है।

वेश-भूषा -

बैगा पुरुष मुख्य रूप से लंगोट और सिर पर गमछा पहनते हैं, जबकि महिलाएँ साड़ी और पोलखा का प्रयोग करती हैं। हालांकि अब युवा पीढ़ी आधुनिक कपड़े भी पहनती है। इनका पहनावा आदिम जीवनशैली, सरलता और प्रकृति के प्रति सम्मान को दर्शाता है जिसे वे आज भी अपनी पहचान के रूप में संजोए हुए हैं।

मुख्य व्यवसाय -

बालाघाट जिले (विशेषकर बैहर तहसील) में बैगा जनजाति का मुख्य व्यवसाय और आजीविका के साधन पारंपरिक और वन-आधारित हैं। इनका मुख्य व्यवसाय वनोपज संग्रह, पशुपालन और कृषि है। आधुनिक युग में ये झूम खेती (बेवार या दहिया) भी करते हैं। परंपरागत रूप से वे झूम खेती करते थे, जिसे 'बेवार' कहा जाता है। अब वे स्थायी खेती (कोदो, कुटकी, और अन्य मोटे अनाज) की ओर बढ़ रहे हैं, लेकिन उनकी तकनीक अभी भी आदिम और पारंपरिक है। कृषि और वनोपज के अतिरिक्त बैगा जनजाति के लोग स्थानीय स्तर पर मजदूरी और कृषि कार्यों में भी लगे रहते हैं। वनों से तेंदूपत्ता, हर्रा, बहेड़ा, शहद, महुआ और गोंद जैसी लघु वन उपज (Minor Forest Produce) एकत्र करते हैं और उसे बेचकर अपनी आजीविका चलाते हैं।

विवाह -

बालाघाट जिले (मध्य प्रदेश) में बैगा जनजाति का विवाह अत्यंत पारंपरिक और अनूठा होता है, जिसमें 'उठवा विवाह' और 'चोर विवाह' प्रमुख हैं। बैगा जनजाति में एक से अधिक विवाह प्रचलित हैं और स्त्रियों को भी दूसरा विवाह करने की स्वतंत्रता है। तलाक की स्थिति में, महिला का बच्चों पर अधिक अधिकार होता है या समुदाय 15 साल की उम्र तक उनके लिए पालक नियुक्त करता है।

धर्म -

ये वृक्षों की पूजा करते हैं और बूढ़ा देव तथा दूल्हा देव को अपना प्रमुख देवता मानते हैं। बैगा एक प्राचीन और प्रकृति-पूजक आदिवासी जनजाति है। इनका धर्म और विश्वास पूरी तरह से प्रकृति, वन और आत्माओं से जुड़ा हुआ है। इनके अलावा, वे दूल्हा देव (विवाह के देवता), ठाकुर देव (भूमि के देवता), और विभिन्न स्थानीय आत्माओं की पूजा करते हैं।

वर्तमान समय में बैगा संस्कृति के संरक्षण में शासन की भूमिका -

बालाघाट जिले में बैगा समुदाय के लिए कई परियोजनाएँ और योजनाएँ चल रही हैं। इनमें सबसे प्रमुख है बैगा महिलाओं को पोषण आहार के लिए मासिक ₹1500 की अनुदान राशि देना, जिससे 5708 महिलाएँ लाभान्वित हो रही हैं। इसके अलावा, बैगा जनजाति के सांस्कृतिक और पारंपरिक खेल जैसे बैगा ओलंपिक का आयोजन भी होता रहा है, जो उनके पारंपरिक खेलों और सांस्कृतिक विरासत को बढ़ावा देता है।

बैगा ओलंपिक -

बैगा समुदाय के पारंपरिक खेलों को बढ़ावा देने के लिए बालाघाट जिले के बैहर तहसील में 'बैगा ओलंपिक' आयोजित किए जाते हैं। पारंपरिक खेलों में रस्साकशी, गेंड़ी दौड़, कंचा, तीरंदाजी, और अन्य पारंपरिक खेल शामिल किये जाते हैं जो बैगा संस्कृति को दर्शाते हैं। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य बैगा जनजाति की संस्कृति का संरक्षण, खेल कौशल का प्रदर्शन और बैगा समुदाय को मुख्यधारा से जोड़ना। इस तरह के आयोजनों से बैगा समुदाय की पारंपरिक खेलों, जैसे पारंपरिक उपकरणों के साथ खेले जाने वाले खेल, को संरक्षित करने और बढ़ावा देने में मदद मिलती है।

पोषण आहार अनुदान योजना -

बालाघाट में बैगा समुदाय की बड़ी आबादी है और यह जिला अपनी सांस्कृतिक विविधता के लिए जाना जाता है। मध्यप्रदेश शासन द्वारा प्रदेश में निवास करने वाली विशेष पिछड़ी जनजाति बैगा, भारिया एवं सहरिया परिवार की महिला मुखिया को पोषण आहार अनुदान के रूप में हर माह 1500 रुपये की राशि प्रदान की जा रही है। इस योजना से बालाघाट जिले की 5708 बैगा महिला मुखिया लाभान्वित हो रही है।

पोषण आहार अनुदान योजना के अंतर्गत बैगा जनजाति की बिरसा विकासखंड की 2325, बैहर की 1863, परसवाड़ा की 753, लांजी की 282, बालाघाट की 209, वारासिवनी की 206, किरनापुर की 45 एवं लालबर्रा विकासखंड की 25 बैगा महिला मुखिया को हर माह 15-15 सौ रुपये की राशि प्राप्त हो रही है। यह राशि इन बैगा महिलाओं के बैंक खातें में हस्तांतरित कर दी जाती है। शासन से इस राशि के मिलने से बैगा महिलाओं में अपने पोषण आहार के प्रति जागरूकता आयी है। इस योजना की राशि सीधे उनके बैंक खाते में आने से उनका बैंक से सम्पर्क हुआ है और वे अपने खाते से लेन-देन भी करने लगी है। इस तरह से यह योजना बैगा महिलाओं को वित्तीय रूप से साक्षर एवं जागरूक बनाने का काम भी कर रही है।

आधुनिकता का प्रभाव -

आधुनिकता के प्रभाव से बैगा जनजाति में बदलाव आ रहा है। कई लोग सघन वनों को छोड़कर मैदानी इलाकों में बस रहे हैं और आधुनिक कृषि पद्धतियों को अपना रहे हैं। आधुनिक शिक्षा और जीवनशैली ने बैगा समुदाय पर प्रभाव डाला है जिससे पारंपरिक ज्ञान के कुछ हिस्सों में बदलाव या अलगाव देखा जा रहा है। उदाहरण के लिए गोदना (टैटू) प्रथा पहले की तरह प्रचलित नहीं रही है क्योंकि युवा पीढ़ी इसमें कम रुचि दिखाती है। मोबाइल और इंटरनेट के प्रसार से बैगा युवा बाहरी दुनिया से जुड़ रहे हैं। बैगा जनजाति धीरे-धीरे मुख्यधारा की संस्कृति से जुड़ रही है लेकिन वे अभी भी अपनी विशिष्ट पहचान (विशेष पिछड़ी जनजाति) और पारंपरिक जीवन के बीच एक संक्रमण काल से गुजर रहे हैं।

आधुनिकता और चुनौतियाँ -

बैगा जनजाति को विशेष रूप से कमजोर जनजातीय समूह (PVTG) के रूप में वर्गीकृत किया गया है और वे शिक्षा, स्वास्थ्य और बुनियादी सुविधाओं की कमी जैसी चुनौतियों का सामना कर रहे हैं। बावजूद इसके समय के साथ बदलती परिस्थितियों के कारण बैगाओं ने खेती-बाड़ी का काम शुरू कर दिया है फिर भी बेवार की बाजरा की फसलें, जिन्हें कोदो और कुटकी के नाम से जाना जाता है बैगाओं का मुख्य आहार बनी हुई हैं।

वर्तमान में यह जनजाति कई गंभीर सामाजिक, आर्थिक और स्वास्थ्य चुनौतियों का सामना कर रही है। बालाघाट जिले के बैगा समुदाय को अपनी पारंपरिक पहचान बनाए रखने के साथ-साथ आधुनिक विकास के लाभों तक पहुँचने की दोहरी चुनौती का सामना करना पड़ रहा है। उनके पोषण स्तर में सुधार और आजीविका के विविध स्रोत विकसित करना, उनके उत्थान के लिए अत्यंत आवश्यक है।

निष्कर्ष एवं सुझाव -

मानव जीवन परिवर्तनशील है। परिवर्तन प्रकृति का नियम है। इस आधुनिक परिवर्तित दौर में भी बैगा जनजाति अपनी संस्कृति और परंपरा को सुरक्षित रखे हुए हैं। यही इस जनजाति की एक पहचान है। यह जनजाति अपनी संस्कृति

को संजोए हुए है परन्तु आधुनिकता के प्रभाव से इनकी जीवन शैली में भी बदलाव आ रहा है। इनमें से कई बैगा अब घने जंगलों के बजाय मैदानी इलाकों में रहकर कृषि कार्य करना पसंद करते हैं।

बैगा आज विकास की दहलीज पर खड़े हैं और उनके और पूरे समाज के लिए चुनौती यह है कि वे अपने आर्थिक विकास के साथ-साथ अपनी समृद्ध संस्कृति और विरासत को भी बनाए रखें। यह जनजाति अपनी संस्कृति को संजोए हुए है लेकिन आधुनिकता के प्रभाव से इनकी जीवन शैली में भी बदलाव आ रहा है।

सन्दर्भ -

- चौरसिया, विजय. 2004. प्रकृति पुत्र बैगा, भोपाल: मध्य प्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी।
- एल्विन, वेरियर. 2007. द बैगा. नई दिल्ली: ज्ञान पब्लिशिंग हाउस।
- गंगवार, एम. और पी. बोस, 2013, 'द बैगा पीपल.' ऑनलाइन http://www.peoplesoftheworld.org/hosted/baiga/ (29 दिसंबर, 2017 को देखा गया)।
- मिश्रा, एन. 2003. भारत में आदिवासी संस्कृति. नई दिल्ली: कल्पज़ प्रकाशन।
- निर्गुण, बसंत. 1989. 'बैगा, सहरिया और शहडोल के आदिवासीयों कि मिथक कथाएं।' आदिवासी लोक कथाएं में, निरंजन महावर द्वारा संपादित, 137-68। भोपाल: मध्य प्रदेश लोककला परिषद।
- रसेल, आर०वी०, हीरालाल, 1916. द ट्राइब्स एंड कास्ट ऑफ सेन्ट्रल प्रोविसन ऑफ इंडिया, वाल्युम दो, पृ० 78,79

■ ■ ■